10 AUG 2022

INDIAN EXPRESS

23-YEAR-OLD WON SILVER IN JUDO

Behind CWG medal, a mother's struggle: 'Took loan, withdrew pension'

ARNAV CHANDRASEKHAR
NEW DELHI, AUGUST 9

FROM THE outside, Commonwealth Games medalist Tulika Maan's Tagore Garden residence shows no sign of housing a champion. But just a few hours earlier, members of the neighbourhood had thronged the area to congratulate the 23-year-old judo silver medalist.

"It was amazing, out of this world. So many people had come to greet her at the airport. When she came back to Tagore Garden, the local politicians walked back with her. One thing that really touched my heart was that the neighbours had come to celebrate her win," her mother, Delhi Police assistant sub-inspector Amrita Singh (55), told *The Indian Express*.

ASI Amrita's colleagues in the force are Tulika's fans too: "They are all extremely happy to hear about her win, and have even been using her picture as all their profile pictures."

But the medalist herself is nowhere to be seen, having gone to see a physiotherapist to examine a leg injury from the Games. Her mother said ruefully, "I haven't been able to spend much time with her yet, and she also has to go to SAI (Sports Authority of India) Bhopal tomorrow for a felicitation."

Over the phone, Tulika told *The Indian Express*, "It was a great experience at the Commonwealth Games. But I never want to overreact after winning; now I have to prepare for the Asian Games."

Tulika is not one to sit complacently on her laurels, according to her mother: "She regrets that she didn't win the gold medal." Tulika echoed this: "I made a mistake during a half-minute period in the fight. If not for that, it might have gone differently."



Judo silver medalist Tulika Maan being welcomed at the airport on her return from the games. *Express*

When she's back home, Tulika usually likes to stay there, her mother said: "Her idea of a night out is hanging out with her friends on the roof." Those include her fellow judo competitors. "They are family — in fact they call me 'ma' and not 'aunty'. They stay here for many days sometimes," her mother said.

But it has been a hard journey to get here, with ASI Amrita raising her daughter alone after her husband passed away. "We got occasional help sometimes from authorities for travel tickets, but for the most part, I have had to manage alone. I have even taken personal loans and withdrawn from my pension fund — I don't have a great deal of savings to speak of, after 31 years in the force," she said.

She had originally put Tulika into judo classes in 2006, when she got frustrated with being cooped up at home or being taken to the police station. Tulika has been competing in major tournaments since 2017.

One of Tulika's fans is her 11-year-old sister, Vanshika. Her mother said, "In fact, she knows much more about me than judo; I don't follow the sport much. Vanshika herself is interested in shooting."

ASI Amrita finds the situation amusing. "Even with Tulika, I wanted her to focus on studies. It's not like I pushed her to become a star. Now the younger one also wants to start shooting — I don't know what I will do!" she said.

But for all this, Tulika has maintained her humility, despite returning as a champion. Her mother said, "She was never one to go around talking about the various awards she had won. In fact, she's not very enthusiastic about crowds also, she is very down to earth. I think this is what makes her a star."

epaper.indianexpress.com

नवभारत टाइम्स

तूलिका की मां के लिए गोल्ड से कम नहीं सिल्वर

देश का मान बढ़ाने वाली दिल्ली की बेटी का घर लौटने पर हुआ भव्य स्वागत

■ राजेश पोद्दार, नई दिल्ली

विजेता वो नहीं बनते जो कभी हारते नहीं हैं, बल्कि वो बनते हैं जो कभी हार मानते नहीं हैं...। कुछ ऐसी ही हैं तूलिका मान, जो भले ही बर्मिंगम कॉमनवेल्थ गेम्स में महिला जूडो इवेंट के 78 किलोग्राम भारवर्ग में स्कॉटलैंड की सारा एडलिंगटन के खिलाफ हार गईं और उन्हें सिल्वर मेडल से ही संतोष करना पड़ा। मेडल का रंग बेशक सिल्वर रहा, लेकिन उनकी यह जीत उनकी मां अमृता सिंह के लिए गोल्ड से कम नहीं है।

बर्मिंगम से भारत लौटीं तूलिका मान मंगलवार को जब दिल्ली के टैगोर गार्डन स्थित अपने घर पहुंचीं तो उनके स्वागत में लोग भारी तादाद में पलकें बिछाए खड़े थे। ढोल-नगाड़े के साथ भारत माता की जय, वंदे मातरम के जयकारे लगाते हुए एयरपोर्ट से टैगोर गार्डन पुलिस क्वॉर्टर पहुंचीं तूलिका का भव्य स्वागत किया गया। बर्मिंगम में अपना इवेंट खत्म होने पर तूलिका ने भरी हुई आवाज में अपनी मां से कहा था- 'सॉरी मां, मैं गोल्ड नहीं जीत सकी।'

सैकड़ों लोगों से घिरी और स्वागत के जोरदार माहौल के बीच एनबीटी से बातचीत में तूलिका ने बताया कि कॉमनवेल्थ में जो कसर रह गई है, उसे पूरा करने के लिए अगले साल के एशियन गेम्स और 2024 के ओलिंपिक्स की तैयारी उन्होंने अभी से शुरू कर दी है। उन्होंने कहा, 'मैं हार मानने वाली नहीं हैं, क्योंकि मैंने गोल्ड की तैयारियां की थीं, लेकिन सिल्वर ही जीत सकी हूं। मेरी मां मेरे इस मेडल को देखकर काफी खुश हैं।

> बचपन में ही पिता की हो चुकी है मौत, मां अमृता सिंह दिल्ली पुलिस में एसआई हैं

बेटी की सफलता को बनाया लक्ष्य : तूलिका की उम्र 2-3 साल की रही होगी, तभी उनके पिता की मौत हो गई। बताया जाता है कि रेंजिश में उनकी हत्या कर दी गई थी। इसके बाद मां अमृता सिंह, जो दिल्ली पुलिस में सबइंस्पेक्टर हैं, उन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य तूलिका की सफलता को ही बना लिया। तूलिका ने बताया कि वह शुरुआती दिनों में रेवाड़ी के एक हॉस्टल में पढ़ाई करती थीं। उसके बाद दिल्ली आ गईं। दिल्ली आकर उन्होंने अपनी शुरुआती पढ़ाई टैगोर गार्डन केंद्रीय विद्यालय से की।

बेटी के सपनों को मां ने लगाए पंख



तूलिका ने घर पहुंचकर मां के साथ बांटी मेडल जीतने की खुशी

मां अमृता ने कहा कि मैंने कई मुश्किलों को पार कर तूलिका को ऐसी शिक्षा दी कि वह तिरंगे को बुलंदियों पर पहुंचा सके। मेरे पिताजी नेवी में थे और मैं खुद दिल्ली पुलिस में हूं। जब विदेश में भारत का झंडा लहराता है, तो मेरे लिए सबसे गर्व की बात होती है। जब वह छोटी थी और जूडो की प्रैक्टिस के लिए जाना शुरू किया तो मैंने पूरा सपोर्ट किया। आज मेरे कई सपने पूरे हो गए हैं। मैंने अपनी सैलरी के अलावा जीपीएफ से पैसे निकालकर तूलिका और अपनी दूसरी बेटी वंशिका की जरूरतों को पूरा किया है।

अमर उजाला

10 AUG 2022

मेडल जीतकर लौटी तूलिका टैगोर गार्डन में जोरदार स्वागत

राष्ट्रमंडल खेलों में जूडो में जीता है रजत पदक



लोगों ने तूलिका को फूल-मालाओं से लाद दिया। अमर उजाला

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। राष्ट्रमंडल खेलों में जूडो में रजत पदक जीतकर घर लौटने पर तूलिका मान का जोरदार तरीके से स्वागत किया गया। पश्चिमी दिल्ली की बेटी के स्वागत के लिए मंगलवार को स्थानीय नेताओं, व्यापारियों और महिलाओं के साथ-साथ आम नागरिक फूल मालाओं और ढोल नगाड़ों के साथ उमड़ पड़े थे। तूलिका मान एयरपोर्ट से सीधा टैगोर गार्डेन पहुंचीं।

सुबह करीब 11 बजे दिल्ली जल बोर्ड कार्यालय के पास तूलिका का स्वागत करने के लिए लोग इंतजार कर रहे थे। यहां मौजूद पश्चिमी दिल्ली जिला भाजपा अध्यक्ष रमेश खन्ना ने कहा कि तूलिका ने मेडल जीतकर अपने माता-पिता के साथ-साथ पूरी पश्चिमी दिल्ली को सम्मान दिलाया है।

मां दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच में हैं सेवारत : तूलिका की मां अमृता सिंह दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच में एएसआई हैं। वह बेटी द्वारा राष्ट्रमंडल खेलों में मेडल जीतने पर बेहद खुश हैं। तूलिका के सिर से 2001 में उनके पिता का साया छिन गया था। अमृता सिंह ने पुलिस की कठिन नौकरी के साथ बेटी को जूडो खेलने के लिए प्रेरित किया। बचपन में

तूलिका का गुस्सा मेडल बनकर बरसा

अमृता सिंह ने बताया कि तूलिका को बचपन में गुस्सा बहुत आता था। एकदिन उन्होंने कहा कि अगर उसे गुस्सा निकालना है तो वह क्यों नहीं घर के नजदीक जूडो क्लब में जाकर इसे निकाले, लेकिन उन्हें जूडो के विषय में कुछ नहीं पता था। तूलिका जब क्लब में निरंतर अभ्यास करने लगीं तो लगातार गोल्ड मेडल आने लगे, यहीं से वह आगे बढ़ती गईं।

स्कूल को 50 साल बाद दिलाया गोल्ड

तूलिका केंद्रीय विद्यालय टैगोर गार्डेन में पढ़ती थीं। करीब 50 साल के बाद केंद्रीय विद्यालय टैगोर गार्डेन को तूलिका की वजह से एसजीआईएफ में गोल्ड मेडल मिला, इसके बाद वो नहीं रुकीं। यशपाल सोलंकी मौजूदा समय में इनके कोच हैं। तूलिका ने राष्ट्रमंडल खेलों में जाने से पहले करीब 30-35 किलो वजन घटाया। उसके बाद उनका चयन हुआ। अब तूलिका मेडल जीतकर आई हैं तो उनकी मां, छोटी बहन और उनके कोच बहुत खुश हैं।

तूलिका की कोच संगीता ने भी मेहनत करके उन्हें खेलने के लिए तैयार किया।